- **स्नातक द्वितीय वर्ष (हिंदी प्रतिष्ठा)-**
  तृतीय पत्र :-डॉ०मनोज कुमार
  सिंह,एसोसिएट प्राध्यापक, हिंदी विभाग,राजा
  सिंह महाविद्यालय, सिवान।

जीना भी एक कला है -जानकीवल्लभ शास्त्री

जीना भी एक कला है .

इसे बिना जाने हीं, मानव बनने कौन चला है ?

फिसले नहीं,चलें, चटटानों पर इतनी मनमानी .

आँख मूँद तोड़े गुलाब,कुछ चुभे न क्या नादानी ?

अजी,शिखर पर जो चढ़ना है तो कुछ संकट झेलो,

चुभने दो दो-चार खार, जी भर गुलाब फिर ले लो.

तनिक रुको, क्यों हो हताश,दुनिया क्या भला बला है ?

जीना भी एक कला है.

कितनी साधें हों पूरी, तुम रोज बढाते जाते ,
कौन तुम्हारी बात बने तुम बातें बहुत बनाते,
माना प्रथम तुम्हीं आये थे,पर इसके क्या मानी?
उतने तो घट सिर्फ तुम्हारे, जितने नद में पानी .
और कई प्यासे, इनका भी सूखा हुआ गला है .
जीना भी एक कला है.

बहुत जोर से बोले हों,स्वर इसीलिए धीमा है
घबराओ मन,उन्नति की भी बंधी हुई सीमा है
शिशिर समझ हिम बहुत न पीना,इसकी उष्ण प्रकृति है
सुख-दुःख,आग बर्फ दोनों से बनी हुई संसृति है
तपन ताप से नहीं,तुहिन से कोमल कमल जला है
जीना भी एक कला है.

आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री (५ फरवरी १९१६ - ०७ अप्रैल, २०११) हिंदी व संस्कृत के कवि, लेखक एवं आलोचक थे।

उन्होने २०१० में पद्मश्री सम्मान लेने से मना कर दिया था। इसके पूर्व १९९४ में भी उन्होने पद्मश्री नहीं स्वीकारी थी।

वे छायावादोत्तर काल के सुविख्यात कवि थे। उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित किया था। आचार्य का काव्य-संसार बहुत ही विविध और व्यापक है।वे थोड़े-से कवियों में रहे हैं, जिन्हें हिंदी कविता के पाठकों से बहुत मान-सम्मान मिला है। प्रारंभ में उन्होंने संस्कृत में कविताएँ लिखीं। फिर महाकवि निराला की प्रेरणा से हिंदी में आए।

शास्त्रीजी का जन्म बिहार के गया जिले के मैगरा गाँव में हुआ था।

कविता के क्षेत्र में उन्होंने कुछ सीमित प्रयोग भी किए और सन् ४० के दशक में कई छंदबद्ध काव्य-कथाएँ लिखीं, जो 'गाथा` नामक उनके संग्रह में संकलित हैं। इसके अलावा उन्होंने कई काव्य-नाटकों की रचना की और 'राधा` जैसा सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य रचा। परंतु शास्त्री की सृजनात्मक प्रतिभा अपने सर्वोत्तम रूप में उनके गीतों और ग़ज़लों में प्रकट होती है।

प्रस्तुत कविता में कवि जीवन को परिभाषित करते हुए कहता है कि जीवन तो सबको मिला है,लेकिन जीने की कला सब मनुष्यों को नहीं आती। इस कला को बिना समझे मानव सही अर्थों में मानव नहीं बन सकता । केवल मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मनुष्य का शरीर पा लेना ही मनुष्य होना नहीं है । मनुष्य होने के लिए आवश्यक शर्त है - उसे जीवन जीने की कला की समझ हो। इसे बिना जाने-समझे मनुष्य मनुष्य नहीं बन सकता । जीवन के पथरीले रास्तों पर बिना फिसले चलना असंभव है। जब मनुष्य अपनी जीवन- यात्रा पर चलेगा,तो उस यात्रा में फिसल कर कभी-कभी गिरेगा भी । चलना और फिसलकर गिरना एक दूसरे के पूरक हैं। इस तथ्य को बिना स्वीकार किए मनुष्य को जीवन की कला नहीं आ सकती ।कवि इसे स्पष्ट करते हुए कहता है कि यदि मनुष्य को सुख आनंद रूपी गुलाब को प्राप्त करने की इच्छा है तो संघर्ष रूपी कांटो को तो उसे स्वीकार करना ही पड़ेगा । बिना संघर्ष के कुछ सुखद प्राप्त नहीं होता । सुख और आनंद रूपी गुलाब की प्राप्ति के लिए कांटो रूपी परेशानियों को झेलना ही पड़ेगा । यदि मंजिल पर पहुंचना है तो रास्तों की कठिनाइयों को पार करना ही पड़ेगा । बिना कठिनाइयों रूपी कांटो की चुभन बर्दाश्त

किए जीवन के विकास के शिखर पर नहीं पहुंचा जा सकता । इन रास्तों की कठिनाइयों से हताश नहीं होना चाहिए । बिना इन कठिनाइयों से संघर्ष किए गुलाब रूपी सुख और आनंद को प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

कवि आगे कहता है कि अनादिकाल से यह प्रकृति तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति करती रही है , लेकिन तुम अपनी इच्छाओं को और विस्तार देते रहे हो। तुम्हारी इच्छाएं अनंत हो गई हैं। यह प्रकृति कितना दे तुझे। तुम भले इस प्रकृति पर नियंत्रण कर लिए हो , लेकिन इस प्रकृति की भी देने की भी एक सीमा है। इस सत्य को जितना जल्दी स्वीकार कर लोगे इतनी जल्दी तुम्हें जीने की कला आ जाएगी। यही तो जीने की कला है । तुमने इच्छा रूपी घड़ों की संख्या इतनी बढ़ा ली है कि उन सभी घड़ों को भरने में पूरी नदी का पानी खत्म हो जाएगा । इस अनंत इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है , क्योंकि इस पृथ्वी पर अधिसंख्य लोग वैसे भी है जिनका गला एक बूंद पानी को तरस रहा है । उनकी भी प्यास बुझानी है। इस सत्य को समझना ही जीवन की कला है ।

कवि समझाते हुए आगे कहते है कि तुमने अभी तक प्रकृति का भरपूर दोहन किया है । अब प्रकृति तुम्हारा साथ नहीं

दे रही है । इससे घबराओ मत । उन्नति की भी एक सीमा होती है। इस सत्य को जितना जल्दी स्वीकार कर लोगे,उतना ही जीवन के लिए ठीक रहेगा। तुम भ्रम में ठंडा समझ बर्फ को पीते आए हो, जबकि वैज्ञानिक सत्य है कि बर्फ की मूल प्रकृति गर्म होती है । यह जीवन सुख-दुख तथा आग-बर्फ से मिलकर ही बनता है । यह सर्वविदित है कि कमल का फूल धूप की गर्मी से नहीं नष्ट होते, अपितु उसे हिमपात जला देते हैं ।

अंततः कवि स्थापित करता है कि अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण ही जीवन की कला है । जब तक इस कला को सब मनुष्य नहीं समझेंगे वे अपने जीवन को व्यर्थ करते रहेंगे।